ISSN 2581-9917

स्त्री की देह

स्त्री की देह
वो उससे बहुत आगे है
अक्सर सुना करता हूँ
और सुनता हूँ
आलीशान घरों की दीवारों
से आती कुंद हँसी को
चुप चिल्लाहटों को
जहाँ उनकी यही देह
रौंदी जा रही है
अक्सर देखता हूँ
छवियाँ
जहाँ जालीदार जंग्लों
और छज्जों से
यही देह बुला रही है
आमंत्रण दे रही है
आओ मुझे रौंदो
मैं स्त्री हूँ
हिंसक हमबिस्तरों के साथ
सोने को अभिशप्त
तुम मेरे भीतर के अंश को
कभी पा नहीं सकते
क्योंकि तुमने पाना नहीं
हासिल करना सीखा है
और सीखा है
कब्जा करना
राज करना
दिलों पर
तुम्हारे बस में न तब था
न अब है
हो भी कैसे
तुम वो जानवर हो
जो खुद मार कर खाते हो
और मेरा दिल कितनी ही बार
कितने बिस्तरों पर
कितने आलीशान घरों में
आफिसों की मेज पर
कॉल सेंटरों की कैब के भीतर
रात और दिन हर क्षण
कितने कितने
लोगों की आँखों
हाथों
नाखूनों
से रौंदा जा चुका है
और तुम हो महामानुष
तुम रौंदी हुई वस्तु
को स्वीकार नहीं करते
और देह क्या है
वस्तु ही तो है।

डॉ. तरुण गुप्ता
सहायक प्रोफेसर
शिवाजी महाविद्यालय, नई दिल्ली।